# इकाई 12 'मानवीनी भवाई' की कथावस्तु और विशेषताएँ

**इकाई की रूपरेखा**

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 कथावस्तु

12.3 'मानवीनी भवाई' की विशेषताएँ

12.4 सारांश

12.5 प्रश्न

## 12.0 उद्देश्य

इस इकाई में पाठक को 'मानवीनी भवाई' उपन्यास का कथासार प्राप्त होगा। यह उपन्यास जिस परिवेश में तथा जिस प्रदेश में रचा गया है, उसे प्रदेश की जीवन-चर्या का भी यहाँ परिचय मिलेगा। राजू और कालू इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। वे दोनों प्रेमी शादी क्यों नहीं कर सके? आगे का उनका जीवन कैसे बीता? खलपात्र बुढ़िया माली ने उन्हें किस प्रकार सताया? अकाल कितना भयानक था? कालू-राजू आदि पात्रों की कैसी दुर्गति होती है? इन सारे प्रश्नों का विस्तृत उत्तर यहाँ मिलेगा। यहाँ यह भी जानने को मिलेगी कि इस रचना की कौन-कौन-सी विशेषताएँ हैं। आशय यह है कि इस इकाई में 'मानवीनी भवाई' उपन्यास की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताएँ प्राप्त हो जाएँगी।

## 12.1 प्रस्तावना

पन्नालाल का मूल स्थान (जन्म-स्थान) गुजरात तथा राजस्थान को जोड़ने वाले, पुराने समय के बनजारी मार्ग पर स्थित है। 'मांडली सीमलवाडा तालुका (तहसील), जिला डुंगरपुर का एक छोटा-सा गाँव है। पहाड़ियों, झरनों और नदी-नालों वाला वह प्रदेश है। एक तरह से कहा जाए, तो आरण्यक परिवेश है। मांडली गाँव कृषि प्रधान था। पन्नालाल भी किसान परिवार में पैदा हुए थे। बीसवीं सदी के आरंभ का वह समय था। वह इलाका सभ्य समाज से बिल्कुल अलग-अलग था। अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास तथा गरीबी की चपेट में जीवन गुजारते इस इलाके की दूसरी भी अनेक कठिनाइयाँ थीं। दरबारी शासन के अन्याय और जुल्म वहाँ की जनता को सहन करने पड़ते थे। आर्थिक स्थिति भी अच्छी न थी। इसलिए साहुकार ब्याज वसूल करने में ही उनका सब कुछ चूस लेते थे। अनाज-पानी भी बहुत मुश्किल से मिल पाता था। पन्नालाल पटेल के मानस पटल पर स्थानीय (आंचलिक) परिवेश हमेशा छाया रहता था। वहाँ का मौसम और वहाँ की विविधरंगी प्रकृति उन्हें बहुत प्रिय थी। उस गाँव की जनता के तीज-त्योहारों और नाना प्रसंगों में लोकजीवन की अभिव्यक्ति देखने को मिलती; खेतों की जुताई के बाद बुवाई, निराई और फसल की कटाई में एक से अधिक मौसम गुज़र जाते; वहाँ की जनता आनंद के लिए तीज-त्योहारों के अलावा मेलों का भी आयोजन करती। कहीं-कहीं लोग ढोल और बाँसुरी भी बजाते; सिवान और जंगल गूँज उठते। इस सबके बीच प्रेमियों की प्रेमकथाएँ बहुत रंगीन रूप धारण कर लेतीं। कभी-कभी लोग मध्यकालीन प्रेमकथाएँ कहते; अकाल

भी पड़ता, दावाग्नि भी लगती और महामारी भी फैलती। कभी सगाई-विवाह होता, कभी गोद-भराई की रस्म होती, तो कभी गौने का प्रसंग आता। थोड़े पढ़े-लिखे एक-दो लोग कभी-कभी रामायण-महाभारत तथा ओखाहरण की कहानियाँ पढ़कर सुनाते। हुक्का-बीड़ी पीकर रोज़-रोज़ की थकावट को मिटाने की कोशिश करते लोग जीवन की लाचारी को भूलने के लिए कभी-कभी अफीम और कसुंबा भी ले लेते। ऐसा है वह प्रकृति और ग्राम-संस्कृति से ओतप्रोत गुजरात के उत्तर-पश्चिम का इलाका। वहाँ सुख-दुख का संघर्ष है, तो प्रेम की मिठास और प्यास भी है। परिवारों के आपसी दाँव-पेच और वैर-विरोध है, शादी-ब्याह या गौने के दावत-भोज भी हैं। पन्नालाल पटेल ने 'मानवीनी भवाई' में इस इलाके को केंद्र में रखकर भूख और गरीबी की कथा का अंकन किया है। इस रचना में जहाँ एक ओर हृदय की भूख (प्रेम) का आक्रंद अपनी चरम सीमा पर है, तो दूसरी ओर पेट की भूख का हाहाकार भी कम नहीं है। दूसरे शब्दों में कहें, तो यह गुजरात का पल्ली समाज है। और शरदबाबू की तरह कहें, तो यह गुजरात का ही नहीं भारतीय पल्ली समाज है। 'मानवीनी भवाई' कालू और राजू के शैशव और किशोर वय की सगाई तथा उनके प्रेम की कहानी कहने वाली कृति है। छल-प्रपंच की वजह से कालू और राजू की शादी नहीं हो पाती। इस रचना में उनकी जुदाई की कथा भी अत्यंत हृदय-विदारक रीति से कही गई है। कथा के उत्तरार्ध में लेखक ने कथानायक और कथानायिका को भयंकर अकाल के बीच डालकर मनुष्य की भूख और उसकी लाचार वेदना का सविस्तार चित्रण किया है। व्यक्तियों के जीवन पर आधारित, लोकजीवन का चित्रण करने वाला यह उपन्यास भारतीय कथा-साहित्य में एक उत्तम कृति है।

## 12.2 कथावस्तु

'मानवीनी भवाई' का पहला प्रकरण 'फलैशबैक' पद्धति पर लिखा गया है। एक ठंडी रात में, खेत की एक झोपड़ी में अलाव के पास बैठकर हुक्का पीता वयोवृद्ध कालू अपने अतीत को याद करता है। परंतु आगे की कथा कालानुक्रम से ही चलती है। अर्थात् थोड़ी देर के लिए यदि पहला प्रकरण कथा से निकाल भी दें, तो कथा में कोई विक्षेप नहीं पड़ेगा। 'मानवीनी भवाई' का दूसरा भाग 'भांग्यना भेरूं' नाम से लिखा गया है। उसमें नायक-नायिका कालू और राजू की संघर्ष कथा आगे बढ़ती है। तीसरा भाग 'घम्मर वलोणुं' दो भागों में विभक्त है। उनमें कालू और भली के पुत्र प्रताप तथा उसकी पत्नी चंपा की कथा केंद्र-स्थान में है। हम यहाँ पर 'मानवीनी भवाई' की मुख्य कथा को केंद्र में रखेंगे।

'मानवीनी भवाई' की कथा कालू के जन्म से समय से आरंभ होती है। किसी सुसुवाती रात में तीस-पैंतीस घरों वाले एक छोटे-से गाँव में कालू के जन्म का वर्णन है। कालू की माँ का नाम रूपाडोसी तथा बाप का नाम वालाभाई पटेल है। उनके जीवन की प्रौढ़ावस्था में भगवान को भूख बुझानी थी; इसलिए कालू के जन्म ने वाला पटेल के घर में तथा पूरे गाँव में भी उत्साह का रूप ले लिया था। गाँव की स्त्रियाँ वाला पटेल के यहाँ जमा होती हैं। बेटे का जन्म हुआ है; इसलिए उसके नामकरण के लिए तथा ग्रहदशा की गणना कराने के लिए ब्राह्मण को बुलवाया गया है; पत्थर पर दूब सरीखे बेटे का जन्म हुआ है और वह भी उस इलाके में पूजे जाने वाली 'काळियादेव' (पास में ही शामळाजी (श्यामजी-श्री कृष्ण) का मंदिर है। वहाँ के लोग शामळाजी को काळियादेव (कालादेव) के नाम से पूजते हैं।) के आशीर्वाद से हुआ है। इसलिए उसका नाम काळु (कालू) रखा जाता है। वाला पटेल के ही खानदान की एक औरत है माली। उसे यह सब कुछ अच्छा नहीं लगता। माली परमा पटेल की पत्नी है। परमा पटेल गाँव का मुखिया है। वह खुद उदार और रीति-नीति वाला

आदमी है; परंतु उसकी पत्नी माली स्वभाव से अत्यंत झगड़ालू तथा ईष्यालु है। ईश्वर ने उसे रणछोड़, नाथा और नाना नाम के तीन बेटे दिए हैं। घर में बहुएँ हैं; नाती-पोते भी आ गए हैं। परंतु माली को तो दूसरों का सुख सुहाता नहीं। अपने खानदान के वाला पटेल के बेटा पैदा हो और जो उसे सुख फूटी आँख से भी नहीं भाती, ऐसी रूपा (कालू की माँ) की गोद में किलकारी मारे-यह माली को सहन नहीं होता। ज्योतिषी ग्रहदशा देखकर बताते हैं कि बड़ा होकर यह बालक समाज का अगुवा बनेगा और इसके नसीब में दो औरतें लिखी हैं। यह सुनकर माली जल कर कोयला हो जाती है। वह कोई न कोई बहाना लेकर कालू के माँ-बाप के साथ झगड़ती रहती है। वह मन ही मन यह भी तय करती है कि इस कलमुँहे कालू को दो बार तो क्या एक बार भी शादी करने दूँ, तो मेरा नाम माली नहीं। वाला पटेल की पूरे इलाके में बड़ी पूछ थी; परंतु वह कालू को चार वर्ष का छोड़कर परलोक सिधार गया। माँ रूपा ने किसी तरह पाला-पोसा और जिसके मन में वाला पटेल के लिए बहुत इज्ज़त थी, ऐसी फूलीडोसी के प्रयत्न से गाँव में ही कालू की सगाई हो गई। इस घटना से बौखला कर माली ने झगड़ा किया और अपना सिर पीटने लगी। बुरा आदमी बुरा काम किए बिना नहीं रह सकता। ऐसे ही माली भी मौका मिलने पर छल-कपट करके राजू और कालू की सगाई तोड़वा देती है। कालू और राजू बचपन में एक साथ खेले-कूदे थे; खेतों में एक साथ घूमे-फिर थे। दोनों के मन में आकर्षण पैदा हो गया था। वे दोनों प्रेम को समझें, उसके पहले ही उनकी सगाई खटाई में पड़ गई। पर जवान होते ही दोनों की समझ में आ जाता है कि समाज ने भले ही उन्हें अलग कर दिया हो, परंतु दोनों के हृदय तो एक-दूसरे के लिए बैचेन थे। माली के सामने कालू की माँ का कोई वश नहीं चलता। उधर राजू की सगाई पड़ोसी गाँव के एक 'दुवाह' वर के साथ हो जाती है। शादी के बाद वह विदा हो जाती है। राजू के जेठ की बेटी भली के साथ कालू की शादी होती है। और इस तरह, जो प्रियतमा थी, और पत्नी बनने वाली थी, वह राजू कालू की चाची सास बन जाती है। भाग्य की विडंबना तो देखिए, कि अब राजू को कालू के साथ मिलना तो है, और कालू का कुशल-समाचार पूछना भी है; परंतु चाची सास के संबंध से; प्रेयसी या पत्नी के रूप में नहीं। वैसे तो शादी और समाज के सूत्र से बँध कर साथ तो रहना है, परंतु प्रेम के लिए आजीवन तरसते रहना है। बल्कि उनकी असली कसौटी तो आगे आती है। मरते समय कालू की माँ कालू से यह वचन ले लेती है कि वह दूसरी शादी नहीं करेगा। मानो रही-सही कसर वह पूरी कर देती है। बिरादरी में उस जमाने में एक के रहते दूसरी पत्नी लाने की रोक न थी। कालू ने माँ को वचन दे दिया है और राजू अब चाची सास बन चुकी है। वह करे तो क्या करे? कालू जब भी ससुराल जाता, राजू के लिए उसकी तड़प बढ़ जाती। कभी-कभी वह मन में यह भी तय करता है कि भले दुनिया जो कहे या करे; परंतु राजू की माँग में सिंदूर डाल दूँ और उसे अपने घर में लाकर बैठा लूँ। समझदार राजू सब कुछ समझती है और वह यह भी जानती है कि अब ऐसा कुछ भी संभव नहीं है। तभी कालू के कान में यह बात आती है कि माली किसी भी तरह से राजू की शादी अपने बेटे नाना के साथ कराने का इरादा रखती है। इससे कालू बहुत बेचैन हो उठता है। इतना ही नहीं, वह उग्र भी बन जाता है। उसका प्रेम सारे बंधन तोड़कर बाहर आ जाता है। वह राजू को बुलाकर खरा-खोटा सुना देता है। राजू को कालू के उन वचनों में अपार प्रेम दिखाई पड़ता है और उसकी आँखें भीग जाती हैं। वह कालू से कहती है कि राजू के सामने अभी इतनी लाचारी नहीं आई है कि वह ऐसी हरजाई बनेगी। तुम अपना कलेजा सवा मन का रखो। इससे कालू को थोड़ी राहत मिलती है। परंतु प्रेम की भूख शांत नहीं होती। घर में भली जैसी पत्नी है; परंतु कालू का मन शांत नहीं होता। पति-पत्नी दोनों के बीच बोलचाल बंद रहती है। भली कालू और अपनी चाची राजू के पुराने रिश्ते को जानती है। इसीलिए वह अधिक चिढ़ी रहती है। बेचारी

राजू को ही दोनों के बीच समझौता कराते रहना पड़ता है। कथा के बीच-बीच में माली और उसके परिवार की लड़ाइयों का भी ज़िक्र आता है। माली घर में किसी को चैन से रहने नहीं देती। परमाडोसा जैसे पति को भी खरी-खोटी सुनाती रहती है।

'मानवीनी भवाई' के प्रकरणों के शीर्षक भी काफी ध्यानाकर्षक हैं। कई प्रकरण तो कहानी के शीर्षक जैसे लगते है; जैसे – 'बावानी लँगोटी' 'धरतीना बीज' 'भूँडे भूँडानो भाग भजव्यो' 'दुखियारों परमो पटेल', 'अबोलाँ काळु-राजू', 'थाक्याना विसामा' 'जोवनाईना डंख', 'एमाँ तारे शुं' 'परथमानो पोठी', मनना मोरला', 'जीव्या-मार्याना जुहार', 'भूखी भूतावळ', 'मालीनुं मोत', 'मानवीनी भवाई', 'खोडणियामाँ माथाराम' और 'उज्जड आभले अमी' अड़तालीस प्रकरणों में विभक्त इस उपन्यास के महत्वपूर्ण प्रकरण हैं। पन्नालाल पटेल वर्णन कला में माहिर हैं। ग्रामीण परिवेश और कृषक जीवन की पृष्ठभूमि पर मुख्य और गौण-पात्रों की कथाओं का वर्णन उन्होंने संतुलन बनाए रखकर किया है। उस वर्णन में ग्रामीणजीवन की कथा विस्तार से चित्रित हुई है। पन्नालाल द्वारा बदलते मौसमों के चित्रण के एक उदाहरण से प्रकृति और मानव जीवन दोनों की गतिशीलता का अनुभव किया जा सकता है-

'इधर गेंद और डंडे (हॉकी) का खेल खेलता उत्तरायण (मकर संक्राति) भी आ गया; और साथ-साथ शिशिर में काँपती फसल के वासंती वस्त्र भी गायब हो गए; वसंत ने धरती पर पीले-पीले पत्तों का बिस्तर लगा दिया; और उसे भी फागुनी हवा ने तितर-बितर कर दिया। एक तरफ पकी फसल पर हँसिया चलने लगे, तो दूसरी तरफ होली के ढोल धमक उठे।' (पृ. 262)

ऐसी प्रकृति के साहचर्य में जीवन को गतिशील बनाने वाले लोग 'मानवीनी भवाई' उपन्यास की लोकचेतना को व्यापक फलक प्रदान करते हैं। पन्नालाल 'भवाई' के खेल, डेरा लेकर आते-जाते बंजारों, नटों के खेल, भिखमंगों के भजनों, होली के ढोल और फाग, गौने के प्रसंग, पहली बारिश, और खेतों की जुताई आदि लोकजीवन के विविध क्रिया-कलापों का चित्रण 'मानवीनी भवाई' में करते हैं। कथा में बार-बार राजू के प्रति कालू की लालसा का वर्णन आता है। ससुराल के संबंध के कारण कालू का राजू के घर बार-बार जाना और उससे मिलना होता है। पत्नी भली के साथ उसकी बनती नहीं है। राजू यह सब जानती है और उन्हें समझा-बुझाकर उनमें मेल कराने की भी कोशिश करती रहती है। साथ ही वह अपने पति द्याळजी (दयालजी) में पूरी निष्ठा भी रखती है और एक आर्य नारी की तरह जीवन जीती है। एक बार वह अपने मायके आती है। वहाँ स्वाभाविक है कि वह अपने जेठ की बेटी भली से मिलने कालू के घर भी जाती है। वहाँ भली अपने मन की भड़ाँस उसके सामने निकालती है और फिर खेत में काम करते कालू के लिए कलेवा लेकर राजू को भेजती है। खेत में काम करता कालू राजू को अपना कलेवा लेकर आते देखता है। उसे देखकर वह क्षण भर के लिए खुशी से झूम उठता है। परंतु दूसरे ही क्षण, पत्नी रूप में राजू को न पा सकने का दुख उसकी खुशी को वेदना में बदल देता है। राजू कालू को समझा-बुझाकर खाना खिलाती है। तब कालू उससे कहता है- 'राम जाने मुझे क्या चाहिए? पर इतना ज़रूर जानता हूँ कि मन को किसी भी तरह से चैन नहीं पड़ता। लगता है जैसे जनम से प्यासा हूँ और प्यासा ही रह जाऊँगा।'

इसके बाद कालू राजू से ज्यादा न मिलने का, और मन की साध को मन में दबाकर जीवन बिता देने का निश्चय करता है। फिर प्रेमियों की विरह-वेदना अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचती है। कथा के मध्यभाग से 'छप्पनिया अकाल' का चित्रण शुरू होता है। उसमें कालू और राजू की कसौटी भिन्न ढंग से होती है। पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं; पेड़

ठूँठ बन जाते हैं। लोग गोबर में अनाज छिपाकर रखते हैं। रात होते ही भूखे भूतों के झुंड जैसे लुटेरे धावा बोलते हैं। भूखे लोग पेट की आग सह नहीं पाते; वे पशुओं को मारकर खाने लगते हैं। कोई भील की स्त्री दूर की एक पहाड़ी पर अपने बेटे को मारकर खा जाती है। कालू के मवेशियों को लुटरे हाँक ले जाते हैं। कालू अपने मवेशियों को बचाने के लिए जाता तो है, पर वहाँ पर भूख का विकराल रूप देख कर वह सुन्न हो जाता है। वह जिस तलवार से मवेशियों को बचाने गया था, वही तलवार 'लो सालो! अपनी माँ के खसमों!' कहकर उन भूखे लोगों की ओर फेंक देता है। जिंदे जानवरों को जहाँ खाया जा रहा हो, और भूख की पीड़ा से लोग हाहाकार कर रहे हों, वहाँ पर कालू के लिए रुकना मुश्किल हो जाता है। इसलिए हथियार फेंककर मानो वह बेजुबान पशुओं की मदद करता है। उनको जल्दी छुटकारा तो मिले। अकाल की मानो यह चरम स्थिति है। वापस आते कालू के मुँह से भगवान के लिए गाली निकल जाती है- 'अकाल डालने वाले भगवान तेरा सत्यानाश हो; तूने आदमियों की ये दशा की!' कालू के मन का आवेश फिर से बाहर निकलता है - 'मेरा वश चले तो दैव से भी भिड़ जाऊँ। अरे! इसे आसमान में छेद कर दूँ! यहाँ पर भूख की पराकाष्ठा दिखाई पड़ती है। दुबले-पतले कमज़ोर लोग तो कब के मर-खप गए। इस पर कालू और राजू कहते हैं कि अच्छा हुआ; उन बेचारों को मुक्ति तो मिली। यह सब देखकर उन्हें दुखी तो नहीं होना पड़ा।

इस भंयकर अकाल के समय में कालू अपनी ससुराल राजू की खोज-खबर लेने जाता है। अकाल के इस हाहाकार के बीच भी राजू के न मिलने की वेदना उसे टीसती रहती है। वह घड़ी भर के लिए सपनों में खो जाता है- लंबी, पतली, गोरी और नुकीले नयनों वाली राजू सीधी गरदन किए सामने से आती है और उसके घर को सँभाल लेती है। परंतु यह तो सपने की बात थी; जबकि सचमुच में राजू अभी हारी नहीं है। वह अपने परिवार तथा पति को बचाने के लिए नीति के मार्ग पर चलते हुए हर संभव कोशिश करती है। वह कालू को अपनी आपबीती सुनाती है- 'एक दिन मैं दुकान पर अनाज लेने गई। सेठ ने मेरे शरीर का बखान किया और मेरे साथ छेड़-छाड़ करने लगा। उस दिन मैं खाली हाथ वापस आई। लौटते समय मेरे मन में तरह-तरह के विचार उठने लगे। मैं सोचने लगी कि यदि मैं मरद होती तो उस सेठ का तो खून ही कर डालती और उसके गोदाम को भूखे लोगों द्वारा लुटवा देती।' कालू ने राजू का यह रूप नहीं देखा था। अपने पति को बचाने के लिए राजू कुछ भी कर सकती है। यह बात कालू को पता है। एक बार वह राजू से पूछ बैठा था कि 'राजू क्या तू सचमुच द्याळजी को बचाना चाहती है?' तब राजू ने जवाब दिया- 'तुम ऐसा सवाल करते हो?' फिर वह आगे कहती है- 'गहना-गुरिया, घर-जमीन भी बेचना पड़े तो बेच कर उन्हें बचाऊँगी। यदि हम जीते रह गए, तो फिर से बादशाही पैदा कर लेंगे।' यहाँ पर कालू की तुलना में राजू हाथ भर ऊँचा साबित होती है। द्याळजी के साथ वह सुखी है। यह बात राजू ने कालू को पहले भी बताई थी। फिर भी राजू काली की लालसा को जानती तो है ही। उसी प्रेम के कारण राजू कालू को सांत्वना देती है। अकाल के इस कठिन समय में साथ-साथ जीना तो संभव नहीं। परंतु साथ-साथ मरने और जलने की महेच्छा दोनों प्रेमी व्यक्त करते हैं।

सरकारी अनाज ले जा रही बैलगाड़ी को गाँव वाले रोकते हैं। कालू वहाँ बीच-बचाव करने की कोशिश करता है। तभी बंदूक की गोली उसे लगती है; और वह अपना आधा हाथ गँवा बैठता है। अब तो अपने गाँव में कुछ बचा है नहीं; वात्रक नदी सुख कर रेत बन गई है। बिना पत्तों के ठूँठ वृक्ष खाने को दौड़ते हैं। अब मवेशी भी नहीं रहे।

जहाँ देखो वहाँ अस्थि-पंजर ही नज़र आता है। बरस भर से गए मेघ वापस आने का नाम ही नहीं लेते। सब के साथ कालू, राजू भली और बचे हुए बच्चे पड़ोसी कस्बे डेगरिया की ओर चले जाते हैं। वहाँ के सेठों ने अन्नक्षेत्र खोल रखा है। डेगड़िया जाने के पहले ही लुटेरे दुष्ट माली को मार डालते हैं। दुष्टता का अंत कितना भयानक होता है, यह लेखक ने दिखाया है। मर जाने के बाद भी नाना अपनी माँ को सुनाते हुए कहता है- 'मरने के बाद जब तेरे पास आऊँगा, तब तेरा गला न दबाऊँ, तो समझना तेरी कोख का जाया नहीं।' माँ कहीं माली जैसी दुष्ट हो सकती है? कालू को वह सारी ज़िंदगी कलमुँहा कहती रही और गलियाँ देती रही; फिर भी माली की नंगी लाश पर कालू ही अपनी धोती का कफन ओढ़ाता है। पति, पुत्रों और बहुओं के साथ-साथ पूरे खानदान को चैन से जीने न देने वाली माली को लेखक ने मानो 'दैवीन्याय' (पोएटिक जस्टिस) द्वारा सुखद मौत दिलाई है।

डेगड़िया में नाना का परिवार भी आता है। वहाँ पर कालू की पत्नी जैसी स्त्रियाँ भी शरीर बेचने का धंधा करती हैं। यह सब देखकर कालू जैसे लोग अत्यंत दुखी होते हैं। कालू सोचता है कि यदि सत् कहीं है, तो वह सिर्फ दो जगहों पर है- एक राजू में तथा दूसरे मौत में। कुत्तों को डाले गए खाने पर लोग टूट पड़ते हैं। उन पर गोलियाँ बरसाई जाती हैं। अकाल में मनुष्य की क्रूरता भी बढ़ जाती है। ऐसी परिस्थिति में सेठ सुंदरजी धर्मादा अनाज शुरू करते हैं। सभी लोग अँजुरी भर अनाज लेने के लिए लाइन में खड़े हैं। परंतु एक कालू ऐसा है, जो अनाज लेने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाता। वह कणबी (पटेल) का बेटा है। मंगन कैसे बन सकता है? इतना ही नहीं, वह यह भी कहता है कि 'हमारे सामने धान का जो ढेर लगा है, वह कौन-से खेत का है, कहो तो पहचान कर बता दूँ।' यह वाक्य सामाजिक विषमता तथा शोषण को उजागर करता है। उधर सेठ कहता है कि यह धान तो तुम्हारा ही है और तुम्हीं को देना है। जितनी शरम तुम्हें हाथ बढ़ाकर लेने में आती है, उतनी शरम हमें यह सदाव्रत करने में आती है। कालू हर रोज कमरे की सफाई जाने की शर्त पर अँजुरी भर अनाज लेता है। अँजुरी में अनाज लेकर वह रहने के ठिकाने पर पहुँचता है; परंतु तभी आँगन में ही भहराकर गिर पड़ता है। राजू उसे गोद में ले लेती है। तब कालू कहता है - राजू! तू कहती थी न कि भूख बहुत बुरी चीज है। परंतु भूख से भी खराब चीज आज मैंने देखी है। 'भूख से भी खराब भीख है। भूख तो सिर्फ शरीर को सिझाती है; परंतु भीख तो मन को भी मार डालती है।' ऐसी कठोर परिस्थिति में, लगता है अब मौत नज़दीक है।

राजू अब तक विधवा हो चुकी है। पहाड़ी की तलहटी में किसी ठूँठे पेड़ के नीचे कालू चित्त पड़ा है। वह राजू से आखिरी 'राम-राम' कहता है। यह सुनकर राजू भहराकर उसकी छाती पर गिर पड़ती है। दोनों यही कामना करते हैं कि ऐसे ही मौत आ जाए। राजू कालू को थोड़ा चलाने की कोशिश करती है। पर कालू मानो एकदम से थक गया हो; इस तरह कहता है- ऐसी मौत बार-बार नहीं आएगी राजू!' राजू समझ जाती है कि कालू को पानी की ज़रूरत है। परंतु पानी तो यहाँ कहीं था नहीं। राजू की गोद में कालू थोड़ा ऊपर उठता है; और उधर राजू थोड़ा झुकती है और अपना स्तन उसके होठों से लगा देती है। कालू की प्यास मिट जाती है। उसकी समग्र काया में चेतना का संचार होता है। आँखों में चेतना सुगबुगाने लगती है। हल्के स्मित के साथ वह राजू को निहारता है। और उधर उत्तरी क्षितिज पर बादलों का झुंड दिखाई पड़ता है। देखते ही देखते वे बादल उन दोनों को सराबोर कर देते हैं। लेखक लिखता है कि अब तो काल भी कालू और राजू को मार नहीं सकता। इस प्रकार अकाल से उबारने वाले बादलों के आगमन के साथ ही 'मानवीनी भवाई' कथाकृति पूरी होती है।

## 12.3 'मानवीनी भवाई' की विशेषताएँ

वर्ष 1985 में 'मानवीनी भवाई' को 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। यह उपन्यास आंचलिक उपन्यास के रूप में जाना जाता है। इसमे एक प्रदेश विशेष का कलात्मक निरूपण हुआ है। इसीलिए इसे प्रादेशिक उपन्यास भी कहा जा सकता है। जनपद के चित्रण की दृष्टि से यह उपन्यास तुरंत ध्यान खींचता है। खेती के सहारे जीने वाले गाँव और वहाँ के गरीबों के जीवन को ऋतुओं के ताने-बाने के साथ पन्नालाल ने इस रचना में बड़ी खूबी के साथ प्रस्तुत किया है। बदलती ऋतुओं के साथ वहाँ ही प्रकृति परिवर्तित होती है। लेखक सर्दी, गरमी और बरसात की खेती तथा उसकी तैयारियों का आलेखन सामाजिक जीवन की प्रकृति के साथ-साथ करता है। उपन्यास का प्रमुख पात्र किसान है तथा आसपास का ग्रामीण समाज भी खेती के काम में लगा हुआ है। इसलिए उपन्यास की कथा में खेती, गाँव-सिवान, ऋतुओं, मौसमों और मौसमों के अनुसार बदलती फसलों का तथा उसी से संबधित आनुषंगिक कथा का आलेखन होता है। गरमियों में खेतों में खाद डालना, असाढ़ में बरसात चालू होते ही खेतों में बुवाई करना, भादों में फसल की निराई करना, क्वार में तैयार फसल की कटाई करना; इसी तरह जाड़ों में गेहूँ-चने की बुवाई करना; उन्हें खाद-पानी देना; फिर होली बीतते-बीतते रबी की फसल की कटाई-मँड़ाई करना आदि किसानों की जीवन-चर्या का चित्रण बखूबी किया गया है। जाड़े की ओस भरी रातों में खेतों की रखवाली करते किसान 'दूहा' और भजन गाते हुए रात बिताते हैं। वर्षा ऋतु की पहली बारिश होती ही हळोतरा (हल चलाने का मुहुर्त) किया जाता है। इस मौके पर खाने के लिए कंसार बनाया जाता है। सावन में पक्के तथा ज्वार-बाजरे के खेतों में पक्षियों को भगाने के लिए मचान बनाए जाते हैं और उन पर बैठकर रखवाले पक्षियों को उड़ाया करते हैं। 'मानवीनी भवाई' नामक इस उपन्यास की रचना पन्नालाल पटेल ने खेत में मचान पर बैठकर ही की थी।

खेत-सिवान के जीवन की तरह ग्रामवासियों के सामाजिक जीवन का भी आलेखन इस उपन्यास में हुआ है। सगाई-विवाह के प्रसंग पर गुड़-लावा खाने के लिए लोग इकट्ठे होते हैं; होली के अवसर पर लोग खुशियाँ मनाते हैं। गरमियों में विवाह और फुलेका (विवाह के अवसर की एक रस्म) के अवसर पर स्त्री-पुरुष ढोलक की ताल पर नाचते-गाते हैं। सीमंत के समय भी प्रसंगोचित गीत गाए जाते हैं। ' वेसता वर्ष' (गुजरात में दिवाली के दूसरे दिन से नया वर्ष आरंभ होती है। इसीलिए उसे वेसता वर्ष कहा जाता है।) के दिन गाँव के युवक गायों को तोरण चढ़ाने का उत्सव मनाते हैं। समय मिलने पर एक-दूसरे के घर आना-जाना, किसी आपद्-विपद् में एक-दूसरे को सांत्वना देना और एक-दूसरे की मदद करना आदि सामाजिक व्यवहार ग्राम-जीवन के अंग हैं। साथ ही टोना-टोटका, अंधविश्वास, जंतर-मंतर, धागा-ताबीज, ओझा-सोखा, भूत-प्रेत आदि की अज्ञानपूर्ण मान्यताएँ भी उसी में घुली-मिली हैं। कालू-राज्रू जैसे मुख्य पात्रों की व्यक्तिगत तथा पारिवारिक कथाओं के सहज विकास तथा उन्हें गति देने के लिए इनका स्वाभाविक वर्णन उपन्यास में हुआ है। यह सारा वर्णन मुख्य कथा के साथ ओतप्रोत है। साथ ही मुख्य कथा को जीवंतता भी प्रदान करता है। यही नहीं, यह सारा वर्णन वहाँ की स्थानीय बोली-भाषा में वहाँ के अपने मुहावरों और कहावतों के साथ हुआ है। मतलब यह है कि यह उपन्यास संही अर्थों में आंचलिकता का वैशिष्ट्य लिए हुए है।

इस उपन्यास का मूल्यांकन उत्तम काल-प्रधान उपन्यास के रूप में भी किया जाता है। इसमें लेखक ने कालक्रम से जीवन के क्रिया-कलापों को बहुत सावधानी तथा बारीकी से

संग्रथित किया है। उपन्यास के पहले प्रकरण को छोड़ दें, तो बाकी के सारे प्रकरणों की कथा कालक्रम से आगे बढ़ती है। उपन्यास की कथा वर्ष 1900 के फलक पर रची गई है। वह वर्ष विक्रम सवत् 1956 वर्ष था। इसीलिए उस वर्ष का भयानक अकाल 'छिप्पनिया अकाल' के नाम से जाना जाता है। उपन्यास में उस अकाल का हृदय-स्पर्शी वर्णन हुआ है। एक तरह से देखें, तो काल की ही लीला है। एक छोटा-सा वर्णन देखिए- 'कालू के रास्ते में पड़ने वाला छप्पन के अकाल का मारा जंगल मानो खाने को दौड़ रहा था। पक्षी भी भूख और प्यास से बिलबिला रहे थे। चैती हवा भी बिगड़ गई थी। ऐसे में जली-भुनी धरती मानो कालू के पाँवों की दुश्मन बन गई थी, इस तरह वह आग उगल रही थी।' 'भूखी भूतावळ' नामक प्रकरण में भूख से जूझते लोगों की व्यथा-कथा प्रभावशाली ढंग से चित्रित की गई हैं। 'मानवीनी भवाई' का अर्थ भी 'जीवन का खेल' के रूप में सार्थक होता है। उसमें भी किसानों के लिए तो यह भवाई का खेल दो-चार मवेशियों और दो-चार बाल-बच्चों का ही खेल है। खेती के काम के लिए भी 'झाझा माणसनी भवाई' (ज्यादे आदमियों का खेल) जैसा भाषा-प्रयोग होता है। एक अकेला आदमी ठीक से खेती नहीं कर सकता। यह उपन्यास काल की कसौटी पर चढ़ने वाले, प्रेम की और पेट की भूख के लिए संघर्ष करते गाँव के सरल, किंतु साहसी लोगों की कथा है।

पात्रों की दृष्टि से भी यह उपन्यास उतना ही महत्वपूर्ण है। व्यक्तिजीवन के आलेखन में मुख्य और गौण दोनों पात्रों का बड़ा योगदान है। कालू और राजू दोनों विवेकशील पात्र हैं। दोनों परोपकारी और धैर्यवान् हैं। प्रेम के लिए तड़पते हुए भी वे कर्म की सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते। राजू को कालू जैसा मनमोहक छैल-छबीला पति नहीं मिला; जबकि उसका पति द्याळजी (दयालजी) रोगग्रस्त और लूला है। फिर भी वह कालू को ऐसा कोई मौका नहीं देती; जिससे मर्यादा का उल्लंघन हो। यही नहीं, वह अपने पति का इलाज अपने जेवर गिरवी रख कर कराती है। कालू भी राजू के प्रति अपार आर्कषण होते हुए भी, अपनी मर्यादा को अच्छी तरह से समझता है और उसे निभाता है। कालू पद से गाँव का मुखिया नहीं है; फिर भी गाँव और समाज में उसकी प्रतिष्ठा मुखिया जैसी ही है। अकाल के समय भी वह सभी की यथासंभव मदद करता है। उसकी काकी दुष्टा माली हमेशा उसे कलमुँहा कहा करती है; फिर भी माली के मर जाने पर उसकी लाश पर अपनी धोती का कफन डालता है। इस तरह कालू की गरिमा अनेक प्रसंगों में उभर कर सामने आती है। दूसरी तरफ राजू भारतीय उपन्यास साहित्य के अनेक नारी पात्रों की तरह ही एक गरिमापूर्ण पात्र है। उसकी तुलना प्रेमचंद के 'गोदान' की धनिया के साथ की जा सकती है। एक तरफ राजू अपने प्रेमी कालू की भावनाओं की रक्षा करती है, तो दूसरी तरफ पति द्याळजी का घर भी सँभालती है। अपनी भतीजी भली का घर-परिवार ठीक से चले, इसके लिए भी वह लगातार प्रयत्न करती रहती है। दुष्टा माली के छोटे बेटे नाना के साथ वह दूसरी शादी करने वाली है, यह अफवाह फैलती है। इससे कालू बौखला जाता है; तब राजू कालू को समझाती है कि दूसरी शादी की बात तो वह सपने में भी नहीं सोच सकती है। छोटे-बड़े सभी दुखों के बीच राजू सदैव हँसती रहती है। लेखक ने उसके यौवन का वर्णन करते हुए उसे वसंत ऋतु की हरी-भरी और विविधरंगी फूलों से लदी प्रकृति जैसी बताया है। स्वभाव से वह गंभीर और साथ-साथ चुलबुली भी है। उसके सिर पर जिम्मेदारियाँ धीरे-धीरे बढ़ती जाती हैं। कथा का अंत होते-होते तो वह विधवा हो जाती है। फिर भी हिम्मत नहीं हारती। साथ ही कालू को जीने की प्रेरणा भी देती है। खुद-दुख भोग कर भी दूसरों के सुख देना राजू का जीवन मंत्र लगता है। उसमें शरद् बाबू के नारी पात्रों की तरह अतिरिक्त भावुकता नहीं है। यथार्थ की भूमि पर उसका सर्जन हुआ है।

माली इस उपन्यास की खल पात्र है। गुजराती साहित्य में उसकी गणना एक विलक्षण पात्र के रूप में होती है। कारण कि किसी अन्य लेखक ने ऐसे दुष्ट स्त्री पात्र का चित्रण इतने विस्तार के साथ नहीं किया है। एक तरह से देखा जाए, तो उपन्यास के पूर्वार्द्ध में वाला, रूपा तथा कालू-राजू जैसे सत्पात्रों का संघर्ष माली जैसे दुष्ट पात्र के साथ निरंतर चलता रहता है। उपन्यास के उत्तरार्ध में माली का स्थान अकाल ले लेता है। इस तरह इस उपन्यास में सत् और असत् के बीच संघर्ष देखा जा सकता है। माली सगे बेटी को भी सुखी नहीं रहने देती; बहुओं और नाती-पोतों को भी शांति से खाने-पीने नहीं देती। वह अपने इज़्ज़तदार और प्रतिष्ठित पति को भी अकारण गालियाँ दे-देकर उसकी इज्जत को दो कौड़ी का कर देती है। राग-द्वेष से सुलगती माली अंत में लुटेरों के हाथों लूटी जाती है और बेरहमी से उनके हाथों मारी जाती है। उपन्यास के अन्य पात्र भली, नाना, परमा पटेल, कालू के माँ-बाप रूपा-वाला, फूली डोसी आदि हैं। ये सभी पात्र लेखक की कलम के जोर पर अपना-अपना प्रभाव छोड़ते नजर आते हैं। राजू का भाई कोदर इसका उदाहरण है। ग्रामीण समाज और वहाँ के लोगों का चित्रण सचमुच जीवंत और यादगार बन गया है।

वर्णन और वस्तु-चित्रण की दृष्टि से भी यह उपन्यास विलक्षण है। ऋतुओं तथा प्रकृति के वर्णन में काव्यात्मक शैली का उपयोग किया गया है, तो दूसरी ओर घटनाओं एवं पात्रों के चित्रण में चित्रात्मकता का सहारा लिया गया है। वर्णन के मामले में भी पन्नालाल मध्यकालीन कवि प्रेमानंद के जैसे कुशल हैं; कथा को कैसे रचा जाए, उसे रोचक कैसे बनाया जाए, किसका वर्णन करना है, किसका मात्र संकेत करना है, इन सब विषयों में पन्नालाल अत्यंत कुशल हैं। इस उपन्यास की कुछ सीमाएँ भी हैं; जैसे कि उपन्यास का पहला प्रकरण ही अनावश्यक लगता है। मानक भाषा के साथ बोलियों के प्रयोग में कभी-कभी असंतुलन दिखाई पड़ता है। कालू-राजू की विरह-व्यथा में कहीं-कहीं लेखक की भी आवाज़ सुनाई पड़ती है। परंतु ये सब नगण्य सीमाएँ हैं । वास्तव में 'मानवीनी भवाई' अपने समाजदर्शन एवं जीवनदर्शन की दृष्टि से एक उत्कृष्ट कृति है।

## 12.4 सारांश

इस उपन्यास के प्रमुख पात्र कालू-राजू के इर्द-गिर्द बुनी गई कथा के तंतु कुछ इस प्रकार हैं –सामान्य जीवन जीने वाले कुलीन दंपति वाला-रूपों के यहाँ जीवन के उत्तरार्ध में पुत्र का जन्म होता है। ब्राह्मण उसकी कुंडली की गणना करता है और स्थानीय चलन के अनुसार बालक का नाम 'कालू' रखा जाता है। फूली डोसी (बुढ़िया) की मदद से गला डोसा की बेटी राजू के साथ कालू की सगाई होती है। परंतु इसी बीच कालू के पिता वाला पटेल का देहांत हो जाता है। वाला पटेल के छोटे भाई परमा पटेल की ईर्ष्यालु पत्नी माली तथा राजू के मामा मनेगू के प्रपंच से कुछ ही समय में वह सगाई टूट जाती है। बिरादरी के पंचों की मध्यस्थता से जगा नरसी की बेटी भली के साथ कालू का तथा जगा नरसी के भाई द्याळजी के साथ राजू का विवाह होता है। कालू और राजू एक-दूसरे के लिए तड़पते रहते हैं। उस इलाके में 'छप्पनिया अकाल' पड़ता है। पेट की आग बुझाने के लिए पहाड़ी जंगलों में रहने वाले भील लोगों को लूटने लगते हैं। भय और भूख से पीड़ित ग्रामवासी पड़ोस के बड़े गाँव (कस्बे) डेगड़िया की ओर चले जाते हैं। उसी दौरान दुष्ट माली की करुण मौत होती है। अंत में कालू और राजू का मिलन होता है। साथ ही बारह महीने के वियोग को संयोग में बदलते हुए मूसलाधार बारिश होती है; और इस तरह कथा पूरी होती है।

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु कालू-राजू की प्रणय कथा और 'छप्पनिया अकाल' से दुख भोगते ग्रामवासियों की व्यथा-कथा जैसी दो धाराओं में आगे बढ़ती है। मुख्य कथा के समानांतर कितने ही गौण पात्र तथा घटनाएँ कथा-प्रवाह को गति देने में सहायक सिद्ध होती हैं। इस तरह लेखक ने मुख्य और गौण कथानक के बहाने एक निश्चित भूखंड और वहाँ के वासिन्दों का जीवंत तथा मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। (शब्दाधीन, नितिन पडगामा)।

## 12.5 प्रश्न

1. 'मानवीनी भवाई' की कथावस्तु लिखिए।
2. 'मानवीनी भवाई' में निरूपित ग्राम्य जीवन की समीक्षा कीजिए।
3. 'मानवीनी भवाई' के प्रमुख पात्रों के बारे में लिखिए।
4. 'मानवीनी भवाई' में वर्णित अकाल के बारे में लिखिए।
5. 'मानवीनी भवाई' की विशेषताओं का निरूपण कीजिए।
6. उपन्यासकार के रूप में पन्नालाल पटेल का मूल्यांकन कीजिए।